पाठ - कैदी और कोकिला

1. क्या गाती हो?....................क्यूँ आली?

शब्दार्थ-

- कोकिल - कोयल (यहाँ विद्रोह और क्रांति का प्रतीक)
- बटमार - रास्ते में यात्रियों को लूट लेने वाला
- तम - अन्धकार
- हिमकर - चंद्रमा
- कालिमामयी - काली
- आली - सखी

व्याख्या- कवि आधी रात में कोयल की आवाज़ सुनकर चौंक उठता है और बेचैनी से उससे पूछता है कि वह बार-बार क्यों गा रही है और उसके इस गीत का क्या अर्थ है। वह जानना चाहता है कि क्या उसमें कोई संदेश या विशेष प्रेरणा छिपी है और यदि ऐसा है, तो वह संदेश किसका है। अंत में, वह कोयल से आग्रह करता है कि वह स्पष्ट रूप से इस बात को बताए।

इसके बाद कवि अपने कारागार की दयनीय स्थिति का वर्णन करता है। वह कहता है कि वह जिस स्थान पर कैद है, वह मनुष्य के जीने योग्य नहीं है। वहाँ की दीवारें ऊँची और भयानक रूप से काली हैं। चारों ओर अपराधियों, चोरों और डाकुओं का बसेरा है। जेल में कैदियों को जीने लायक भोजन भी नहीं मिलता, भरपेट भोजन की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती। भूख और अत्याचार से मन और शरीर तड़पकर रह जाता है। अंग्रेज सिपाही न तो मरने देते हैं और न ही ठीक से जीने देते हैं। हर ओर कड़ा पहरा है, जिससे मुक्ति की कोई आशा नहीं बची है। कवि सोचता है कि चारों ओर जो गहरा अंधकार फैला है, वह केवल रात का अंधेरा है या फिर अंग्रेजी शासन का कष्टदायक प्रभाव, जिसने सब कुछ निराशा में डुबो दिया है। उसे लगता है कि यह अंधकार इतना गहरा है कि आशा रूपी चंद्रमा भी हारकर अपना प्रकाश खो चुका है। अंत में, वह कोयल से पूछता है कि इस घोर अंधकार और निराशा के समय में वह क्यों जाग रही है और क्या वह कोई महत्वपूर्ण संदेश देना चाहती है।

egyanarchive

2. क्यों हूक पड़ी ?...............कोकिल बोलो तो!

शब्दार्थ-

- हूक - कसक या पीड़ा युक्त आवाज़
- वेदना - पीड़ा
- मृदुल - कोमल
- वैभव - समृद्धि
- बावली - पागल
- अर्द्धरात्रि - आधी रात

- दावानल - जंगल की आग
- ज्वालाएँ - आग की लपटें

व्याख्या- कवि कोयल की पीड़ा भरी आवाज़ सुनकर चौंक जाता है और उससे प्रश्न करता है कि उसकी तान में इतना दुःख क्यों झलक रहा है। वह पूछता है कि यह कैसी हूक (गहरी पीड़ा) है जो उसकी कूक में सुनाई दे रही है। क्या कोई भारी दुःख या संकट उस पर आ पड़ा है? कवि कोयल से आग्रह करता है कि वह बताए कि आखिर ऐसा क्या हुआ है जिससे उसकी आवाज़ इतनी दर्द भरी हो गई है। इसके बाद, कवि कोयल से पूछता है कि क्या उसका कोई बहुमूल्य सुख या संपत्ति लुट गई है, जिसके कारण वह इतनी बेचैन हो उठी है? क्या वह अपनी मधुरता और वैभव की रखवाली नहीं कर पाई और अब उस अपार दुःख को व्यक्त कर रही है? कोयल, जो अपनी कोमल और मधुर तान के लिए जानी जाती है, अचानक इतनी दुखी क्यों हो गई?

फिर कवि आश्चर्यचकित होकर पूछता है कि कोयल अचानक इतनी बावली (पागल सी) क्यों हो गई? आधी रात के इस सन्नाटे में वह इतनी जोर से क्यों चीख रही है? क्या उसने किसी भयंकर संकट या विनाश को देख लिया है? क्या उसे किसी जंगल की आग की भयंकर लपटें दिख रही हैं? अंत में, कवि फिर से कोयल से आग्रह करता है कि वह स्पष्ट रूप से बताए कि उसकी इस पीड़ा और व्याकुलता का कारण क्या है।

3. क्या?- देख न सकती जंजीरों का गहना?.........................कोकिल बोलो तो।

शब्दार्थ-

- जंजीर – बेड़ियाँ, हथकड़ियाँ
- गहना – आभूषण, जेवर
- हथकड़ी – हाथ में पहनाई जाने वाली जंजीर
- ब्रिटिश-राज – ब्रिटिश शासन
- कोल्हू – बैलों द्वारा चलाया जाने वाला तेल निकालने का यंत्र
- चर्रक-चूँ – कोल्हू की आवाज़
- तान – संगीत की धुन या स्वर
- गिट्टी – छोटे पत्थर
- अँगुली – हाथ की उंगली
- मोट – पुर चरसा (चमड़े का डोल जिससे कुँए आदि से पानी निकाला जाता है।)
- जूआ (जुआ) – बैलों के कंधों पर रखी जाने वाली लकड़ी
- अकड़ – घमंड, अभिमान
- कूँआ – कुआँ (जल स्रोत), यहाँ शोषण का प्रतीक
- करुणा – दया, संवेदना

egyanarchive

- गज़ब ढाना – अत्याचार करना
- आली – रानी, शासक वर्ग
- अंधकार – अँधेरा, अज्ञान
- बेध – चीरना, पार करना
- मधुर विद्रोह-बीज – मीठे शब्दों में क्रांति का संदेश
- भाँति – प्रकार, तरीके

व्याख्या- कवि कोयल से पूछता है कि क्या वह रात में रोकर यह जताना चाहती है कि उसे हमारी ये बेड़ियाँ पसंद नहीं हैं? अगर वह इन जंजीरों को दुख और बंधन का प्रतीक मान रही है, तो उसे समझना चाहिए कि ये बेड़ियाँ हमारे लिए गुलामी का प्रतीक नहीं, बल्कि ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ हमारे संघर्ष का सम्मान हैं। हमने इन्हें खुशी-खुशी स्वीकार किया है, क्योंकि ये स्वतंत्रता सेनानियों के लिए गहनों की तरह हैं। हमें गर्व है कि हम जेल में रहकर भी अपने लक्ष्य से नहीं हटे। कवि आगे कहता है कि जेल में कोल्हू की चरमराती आवाज़ अब हमारे लिए संगीत बन चुकी है। हम पत्थरों को तोड़ते हुए अपने हाथों से आज़ादी का गीत लिख रहे हैं। जिस तरह हम कठोर पत्थरों को टुकड़ों में बदल देते हैं, उसी तरह हम एक दिन ब्रिटिश शासन को भी नष्ट कर देंगे। मैं अपने शरीर पर भारी बोझ लिए कोल्हू चला रहा हूँ, लेकिन असल में मैं ब्रिटिश शासन के अहंकार को धीरे-धीरे खत्म कर रहा हूँ। इसके बाद, कवि कोयल के गाने का अर्थ समझ जाता है। वह कहता है कि दिन में जब हम संघर्ष और यातनाओं में डूबे होते हैं, तब हम तुम्हारी मधुर आवाज़ नहीं सुन पाते। लेकिन अब समझ आया कि रात में जब चारों ओर शांति है, तब तुम हमारी पीड़ा को कम करने और हमें हिम्मत देने आई हो। कवि कोयल से पूछता है कि क्या उसकी ध्वनि सिर्फ एक सामान्य गीत है, या वह सच में हमारे भीतर विद्रोह की आग जगा रही है? क्या वह हमें संघर्ष और स्वतंत्रता के लिए प्रेरित कर रही है? कवि व्याकुलता से कोयल से उत्तर माँगता है— ”कोयल, बोलो तो!”

egyanarchive

4. काली तू, रजनी भी काली,
   शासन की करनी भी काली,
   काली लहर कल्पना काली,
   मेरी काल कोठरी काली,
   टोपी काली, कमली काली,
   मेरी लौह-शृंखला काली,
   पहरे की हुंकृति की ब्याली,
   तिस पर है गाली, ऐ आली!
   इस काले संकट-सागर पर
   मरने की, मदमाती!
   कोकिल बोलो तो!

अपने चमकीले गीतों को
क्योंकर हो तैराती!
कोकिल बोलो तो!

शब्दार्थ-

- काली – काला रंग
- रजनी – रात्रि, रात
- शासन – सरकार, सत्ता
- करनी – कर्म, कार्य
- लहर – तरंग, प्रभाव
- कल्पना – विचार, सोच
- काल कोठरी – अंधकारमय कारागार, जेल
- कमली – ऊनी चादर
- लौह-शृंखला – लोहे की जंजीरें, बेड़ियाँ
- पहरे – निगरानी, सुरक्षा
- हुंकृति – हुँकार
- ब्याली – सर्पिणी
- गाली – अपमानजनक शब्द
- संकट-सागर – कठनाईयों से भरा जीवन
- मरने की, मदमाती – मौत को गले लगाने की चाहत
- चमकीले गीत – क्रांति के प्रेरणादायक शब्द
- तैराना – बहाना, फैलाना

egyanarchive

व्याख्या- कवि कोयल से कहता है—"हे कोयल! तुम्हारा रंग काला है, आज की रात भी घनी काली है और ब्रिटिश शासन के अत्याचार भी उतने ही काले हैं।" मैं इस कारागार में चोरों और डाकुओं के बीच कैद हूँ, जिससे मेरे मन में भी भयावह और अंधकारमयी विचार उठ रहे हैं। मेरी जेल की कोठरी भी अंधेरे से भरी हुई है। मुझे जो कंबल ओढ़ने के लिए मिला है, वह भी काला है, और जो टोपी पहनने को दी गई है, वह भी काली है। मेरी बेड़ियाँ, जिससे मुझे बाँधकर रखा गया है, वे भी लोहे की काली जंजीरें हैं। इस अंधकारमय माहौल में, रात के समय पहरेदार की कठोर आवाज़ मुझे किसी जहरीले सर्प की फुफकार की तरह चुभती है। इसके अलावा, मुझे जेल के सिपाहियों की गालियाँ भी सहनी पड़ती हैं। यहाँ जीवन पूरी तरह से अशांत और तकलीफ़ से भरा हुआ है। "हे सखी कोयल! तुम इस जेल के इस घुटन भरे माहौल में क्यों चली आई हो? क्या तुम्हें यह एहसास नहीं कि यहाँ तुम्हारे प्राण भी सुरक्षित नहीं हैं?" तुम अपने मधुर स्वर से आनंद और आशा का संदेश देना चाहती हो, लेकिन इस जेल की कठोर दीवारों के बीच, यह स्वर फालतू चला जाएगा। यहाँ निराशा और पीड़ा के बीच, तुम्हारे गीतों का कोई असर नहीं होगा। इस अंधेरी रात में, इस कारागार में, तुम अपने मधुर स्वर से

क्यों गा रही हो? “हे कोयल! मुझे अपने मुख से बताओ, तुम यहाँ क्यों आई हो? तुम्हारी इस पीड़ा भरी पुकार का क्या अर्थ है?”

5. तुझे मिली हरियाली डाली,
   मुझे नसीब कोठरी काली!
   तेरा नभ-भर में संचार
   मेरा दस फुट का संसार!
   तेरे गीत कहावें वाह,
   रोना भी है मुझे गुनाह!
   देख विषमता तेरी-मेरी,
   बजा रही तिस पर रणभेरी!
   इस हुंकृति पर,
   अपनी कृति से और कहो क्या कर दूँ?
   कोकिल बोलो तो!
   मोहन के व्रत पर,
   प्राणों के आसव किसमें भर दूँ!
   कोकिल बोलो तो!

शब्दार्थ-

- हरियाली – हरा-भरा वातावरण
- डाली – पेड़ की शाखा
- नसीब – भाग्य
- कोठरी काली – अंधेरी जेल, कारागार
- नभ – आकाश
- संचार – गति, स्वतंत्रता
- दस फुट का संसार – जेल की छोटी सी कोठरी, सीमित जीवन
- गुनाह – अपराध
- विषमता – असमानता, भेदभाव
- रणभेरी – युद्ध का बिगुल, संघर्ष का आह्वान
- कृति – कार्य, कर्म
- मोहन – मोहनदास करमचंद गाँधी
- व्रत – संकल्प

egyanarchive

- प्राणों के आसव – जीवन का सार, आत्मा
- भर दूँ – समर्पित कर दूँ, अर्पण कर दूँ

व्याख्या- कवि कोयल से कहता है—"हे कोयल! तू कितनी भाग्यशाली है कि तुझे बैठने के लिए हरी-भरी डालियाँ मिली हैं, लेकिन मैं इस अंधेरी, घुटनभरी जेल की कोठरी में कैद हूँ।" तुझे उड़ने के लिए खुला आसमान मिला है, पर मैं इस दस फुट की संकरी कोठरी से बाहर भी नहीं निकल सकता। "जब तू गाती है, तो लोग आनंद से वाह-वाह करते हैं, लेकिन मेरा रोना भी किसी को पसंद नहीं आता। मेरी पीड़ा को कोई सुनना तक नहीं चाहता।" तू स्वतंत्र है, खुले आकाश में रहती है, और मैं परतंत्र हूँ, इस जेल का कैदी हूँ। "इतना सब कुछ जानने के बाद भी, तू इस अंधेरी रात में युद्ध और स्वतंत्रता का गीत गा रही है। बता, मैं क्या करूँ? मेरी विवशता को तू भी समझ रही है।" सोच, मैं इस कैद में रहकर कर भी क्या सकता हूँ? हाँ, तेरी प्रेरणा से मैं यहाँ बैठकर कविताएँ तो लिख ही रहा हूँ। "अब तू ही बता, मैं और क्या करूँ? किस दिशा में अपनी शक्ति लगाऊँ ताकि गांधीजी के स्वतंत्रता संग्राम में अपना योगदान दे सकूँ?" हे कोयल! तू ही मेरा मार्गदर्शन कर, मुझे बता !

प्रश्न अभ्यास

1. कोयल की कूक सुनकर कवि की क्या प्रतिक्रिया थी ?

उत्तर- कोयल की कूक सुनकर कवि को ऐसा लगता है जैसे कोयल उसके लिए कोई संदेशा लेकर आई है। सन्देश महत्वपूर्ण है नहीं तो कोयल सुबह होने तक का इंतज़ार करती।

2. कवि ने कोकिल के बोलने के किन कारणों की संभावना बताई ?

उत्तर- कवि ने कोयल के बोलने की निम्न संभावनाएँ बताई हैं -

1. कोकिला कोई संदेशा पहुँचाना चाहती है।
2. उसने दावानल की लपटें देख लीं है।
3. समस्या अत्यंत गंभीर है इसलिए वह सुबह होने की प्रतीक्षा नहीं कर पाती है।
4. क्रांतिकारियों के मन में देश-प्रेम की भावना को और मजबूत करने आई है।

3. किस शासन की तुलना तम के प्रभाव से की गई है और क्यों ?

उत्तर- अंग्रेज़ो के शासन की तुलना ताम के प्रभाव से की गयी है क्योंकि अँग्रेज़ सरकार की कार्य प्रणाली अन्धकार की तरह काली है। यहाँ अन्धकार का मतलब अन्याय से है । अँग्रेज शासन प्रणाली अन्यायपूर्ण थी।

4. कविता के आधार पर पराधीन भारत की जेलों में दी जाने वाली यंत्रणाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर- कविता के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि तत्कालीन समाज में अंग्रेज़ों द्वारा भारतीय कैदियों को तरह तरह की यातनाएँ दी जाती थी। कैदियों से पशुओं की तरह काम करवाया जाता था। उन्हें अँधेरी कोठरियों में कैदियों को जंजीरों से

egyanarchive

बाँध कर रखा जाता था। कोठरियां भी बहुत छोटी होती थीं और खाने को भी कम दिया जाता था।

5. भाव स्पष्ट कीजिए।
(क) मृदुल वैभव की रखवाली-सी, कोकिल बोलो तो!
(ख) हूँ मोट खींचता लगा पेट पर जुआ, खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कुँआ।

उत्तर-
(क) मृदुल वैभव की रखवाली से यहाँ कवि का तात्पर्य कोयल की मीठी तथा कोमल आवाज़ से है। उसकी आवाज़ में मिठास होने के बाद भी जब वह वेदना पूर्ण आवाज़ में चीख़ उठती है तो कवि उससे उसकी वेदना का कारण पूछता है।
(ख) अंग्रेज़ी सरकार कवि से पशुओं के समान परिश्रम करवाते हैं। कवि के पेट पर जुआ बाँधकर कुएँ से पानी निकाला जाता है। परन्तु इससे भी वे दु:खी नहीं होते तथा अंग्रेज़ी सरकार के षड़यंत्र को विफल कर उनकी अकड़ को समाप्त कर देना चाहते हैं।

6. अर्धरात्रि में कोयल की चीख से कवि को क्या अंदेशा होते है ?
उत्तर- अर्धरात्रि में कोयल के चीखने से कवि को अनेकों अंदेशे होते है जैसे शायद कोयल पागल तो नहीं हो गयी है, या शायद वह किसी कष्ट में है या कोई सन्देश लेकर आई हैं या यह भी हो सकता है कि वह क्रांतिकारियों के दु:ख से द्रवित होकर चीख रही हो।

7. कवि को कोयल से ईर्ष्या क्यों हो रही है ?
उत्तर- कोयल की स्वतंत्रता से कवि को ईर्ष्या हो रही है। वह आकाश में स्वतंत्रता से उड़ान भर रही है और कवि जेल की काल कोठरी में बंद है। कोयल गाकर अपने आनंद को प्रकट कर सकती है पर कवि के लिए तो रोना भी एक बड़ा गुनाह है जिसके लिए उसे दंड भी मिल सकता है।

8. कवि के स्मृति-पटल पर कोयल के गीतों की कौन सी मधुर स्मृतियाँ अंकित हैं, जिन्हें वह अब नष्ट करने पर तुली है ?
उत्तर- कवि के स्मृति पटल पर कोयल के गीतों की कुछ मधुर स्मृतियाँ अंकित हैं। कोयल हरी डाली पर बैठकर अपनी मधुर वैभवशाली आवाज़ से संपूर्ण सृष्टि को अलंकृत करती है, उसके मधुर गीतों से उसकी खुशी झलकती है, वह स्वतंत्रता पूर्वक अपना गीत गाती है परन्तु अब वह अपनी इन विशेषताओं को नष्ट करने पर तुली है। वह बावली सी प्रतीत हो रही है।

9. हथकड़ियों को गहना क्यों कहा गया है ?
उत्तर- कवि ने हथकड़ियाँ गलत काम करने से नहीं पहनी हैं। उन्हें स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के कारण अँग्रेज़ सरकार ने

egyanarchive

हथकड़ियाँ पहनाई हैं जो उनके लिए यह गौरव की बात है। इसलिए हथकड़ियों को गहना कहा गया है।

10. 'काली तू .....ऐ आली!' - इन पंक्तियों में 'काली' शब्द की आवृत्ति से उत्पन्न चमत्कार का विवेचन कीजिए।
उत्तर- इन कविता की पंक्तियों में कवि ने नौ बार काली शब्द का प्रयोग किया है। शब्द तो एक ही है परन्तु भिन्न -भिन्न अर्थों में इसका प्रयोग किया गया है। कही पर यह शब्द अँग्रेज सरकार के काले शासन को संबोधित कर रहा है तो कहीं वातावरण की कालिमा और निराशा को उजागर कर रहा है।

11. काव्य - सौंदर्य स्पष्ट कीजिए -
(क) किस दानावल की ज्वालाएँ हैं दिखीं ?
(ख) तेरे गीत कहावें वाह, रोना भी है मुझे गुनाह!
देख विषमता तेरी - मेरी बजा रही तिस पर रणभेरी!
उत्तर-
(क) यहाँ कवि कोयल की वेदना पूर्ण आवाज़ पर अपनी आशंका व्यक्त कर रहा है। अपनी प्रश्नात्मक शैली से कवि कोयल के कष्ट का अनुमान लगा रहा है। कवि ने विम्बात्मक शैली का प्रयोग किया है, भाषा में सहजता तथा सरलता है।
(ख) प्रस्तुत काव्य पंक्तियों में कवि ने अपने तथा कोयल के जीवन की विषमताओं की ओर संकेत किया है। कवि ने यहाँ तुकबंदी का प्रयोग किया है, अपनी तथा कोयल के जीवन की तुलना की है तथा सरल भाषा का प्रयोग किया है।

रचना और अभिव्यक्ति

12. कवि जेल के आसपास अन्य पक्षियों का चहकना भी सुनता होगा लेकिन उसने कोकिला की ही बात क्यों की है ?
उत्तर- यहाँ कोकिला भारत माता का प्रतीक है। कोकिला रात के समय नहीं बोलती है। उसकी आवाज़ से कवि को वेदना की अनुभूति होती है। अतः रात को उसका इस प्रकार से करुण स्वर में गाना आने वाले किसी संकट का प्रतीक है। कोकिला की आवाज़ अन्य पक्षियों से अधिक मधुर तथा भिन्न है। इसलिए कवि ने कोकिला की ही बात कही है।

13. आपके विचार से स्वतंत्रता सेनानियों और अपराधियों के साथ एक-सा व्यवहार क्यों किया जाता होगा ?
उत्तर- अँग्रेज़ सरकार के लिए स्वतंत्रता सेनानी और अपराधी एक जैसे थे। दोनों उनकी व्यवस्था में खलल डालने काम करते थे। सरकार के लिए दोनों ही दोषी थे। सरकार क्रांतिकारियों की आज़ादी की माँग को दबाना चाहती थी। स्वतंत्रता सेनानियों के मनोबल को तोड़ने के लिए तथा भारत पर अपनी सत्ता कायम रखने के लिए वे दोनों के साथ समान व्यवहार करती थी।